MBF-1601030401020200 Seat No. ______

B. A. (Sem. II) (CBCS) (W. E. F. 2016) Examination

March / April - 2018

Hindi - (Compulsory)

(Aadhunik Hindi Kavya - Panchvati - Evam Vyakaran)

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (१) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।
(२) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

१ मैथिलीशरण गुप्त के जीवन व सर्जन पर प्रकाश डालिए । १४

अथवा

१ पंचवटी प्रबंध का कथासार लिखकर उसका उद्देश्य लिखिए । १४

२ पंचवटी प्रबंध के आधार पर लक्ष्मण के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए । १४

अथवा

२ पंचवटी प्रबंध में कवि की मौलिक उद्‌भावनाएँ – विस्तार से लिखिए । १४

३ खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर पंचवटी प्रबंध की समीक्षा कीजिए । १४

अथवा

३ पंचवटी प्रबंध में कवि के नारी विषयक दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए । १४

४ वर्तमान नारी चेतना के संदर्भ में शूपर्णखा के चरित्र की समीक्षा कीजिए । १४

अथवा

४ पंचवटी प्रबंध में व्यक्त आदर्श राजनीति पर लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में चर्चा कीजिए । १४

५ (अ) पल्लवन कीजिए : ७

मनः प्रसाद चाहिए केवल,
क्या कुटिर फिर क्या प्रासाद ?

अथवा

स्वावलम्बन की एक झलक पर,
न्यौछावर कुबेर का कोष ।

(ब) संक्षेपण कीजिए : ७

हम हिन्दी को अँगरेजी का स्थान नहीं दिलाना चाहते । हमारी दृष्टि में हिन्दी कदापि वह भाषा नही है, न हम उसे वह भाषा बनने देगें जो एक बलात लादी गयी औपनिवेशिक एकरूपता का साधन और हथियार हो । हम हिन्दी को अँगरेजी का स्थान नहीं दिलाना चाहते, हमारी दृष्टि में हिन्दी वह भाषा नहीं है, न हम उसे वह भाषा बनने देंगे जो अन्य भारतीय भाषाओं के विरोध में, उन्हें नीचे दबाकर रखने के लिए, उनकी प्रतिभा को कुंठित करने और कुंठित करने के बाद हीनतर बनाने के लिए, एक झूठे अहंकार को प्रश्रय देकर एक स्थायी सर्वसाधन सम्पन्न शासक वर्ग की वाणी बने और बनी रहे । हम हिन्दी के नाम पर वह स्थान छेंक लेना और छेंके रहना नहीं चाहते, जो हिन्दीतर भाषा भाषी प्रदेशों में उनकी अपनी–अपनी भाषा का है, होगा और होना चाहिए ।

अथवा

ईश्वर को न तो मानव के प्रयासों की अपेक्षा है और न वह मानव से अपने अनुग्रहों का प्रतिदान ही चाहता है । वह स्वयं राजाधिराज है । उसके संकेत मात्र से उसके असंख्य गण पृथ्वी, आकाश और सागर छान डालते हैं । उनके समक्ष क्षुद्र मानव के प्रयासों का कोई मूल्य नहीं । जो मनुष्य उसके निर्धारित पथ पर प्रसन्नतापूर्वक चलता रहता है, वही ईश्वर का सच्चा सेवक है । जिसे ईश्वर में अविचल श्रद्धा है, सांसारिक दृष्टि से कोई काम न करने पर भी उसकी गणना ईश्वर के सेवकों में होती है । उसका जीवन निरर्थक नहीं होता ।